ISSN:2583-8849

बेनी प्रवीन

1-

मोर की पाखैं किरीट बन्यो कछु लाखें लगाई न नंद घनेरे।
गोविंद ये तो गरूर करौ गुन कौन से बेनी प्रवीन अनेरे॥
पीत पिछौरी कसे कटि में घटि जानत औरनि आपुन नेरे।
चाकर चेरे परे चरवा के हैं, ऐसे हमारे बबा के घनेरे॥

2-

कारीगरी मैं करी बहुतै न जरी गई तो कछु बैन भलाई।
जानत हौ तुम मोहन लाल सोनारि अनारिनि क्यों ठहराई॥
रीझि कै बेनी प्रवीन भई मन खीझि के बात गई न कन्हाई।
लाइये हीरा अमोलक लाल अबै पहुँची तुरतै बनि आई॥

3-

दीन्हो उन्है अरुझाय सखीन औ हा हा हहा के हँसै भरि मोद में।
देखत ठाढ़ी तहाँ ललिता लला नाहक ही लरे बाल बिनोद में॥
साखी पै बेनी प्रबीन कहै अबै भाजि दुरे हैं कहूँ उतकोद में।
को हैं हमारे हमैं क्यों कहैं कछु यो सिसकै परी सासु की गोद में॥

4-

जान्यो न मैं ललिता अलि ताहि जो सोवत माहिं गई करि हाँसी।
लाये हिये नख नाहरि सम मेरी तऊ नहिं नींद बिनासी॥
लै गई अंबरु बेनी प्रवीन ओढ़ाय लटी दुपटी ढंग मासी।
तोरी तनी तन छोरि विभूषण भूलि गई गल देन को फाँसी॥

5-

भृकुटी धनु बेसर मोर मनौ मनि मानिक इंद्र वधू जितु है।
दुति दामिनि कोर हरी बन बेलि घटा घन घूंघुट सों हितु है॥
उमगो रस बेनी प्रवीन रसाल भयो अब चातक सो चितु है।
हित रावरे नौल किसोर लला अबला भई पावस की रितु है॥

6-

गरजि घुमंडिले सकल महि-मंडिले तू,
दंड विरहीन को उमंडि अब ऐंठैंगो।
दादुर पपीहा दीह दारुन देखाइ दुःख,
मोरन को सोर तन तोर कर पैठैगो॥
चपला कृपान बुंद बान से प्रवीन बेनी,
सीतल समीर प्रान अधिक अमेठैगो।
जारी हौं वसंत की लेथारी मारी ग्रीषम की,
पावस कलंक तेरे सीस चढ़ि बैठैगो॥

7-

कंकन करन कल किंकिनी कलित कटि,
कंचन कंगूरा कुच केस कारी जामिनी।
कानन करन फूल कोमल कनोल कंठ,
कंबुक कपोत कीर कोकिल कलामिनी॥
केसर कुसुम कलधौत की कछू ना कांति,
कोबिद 'प्रबीन बेनी' करिवरगामिनी।
कोककारिका-सी किन्नरी की कन्यका-सी कल,
काम की कला-सी कमला-सी खासी कामिनी॥

8-

तन की सुबास बास बहत समीर तहाँ,
अलिन की भीर अवलीन छबि ह्वै रही।
नये-नये फीके लगे किसलै लगन आली,
पगन की लाली द्रुम जालन सम्वै रही॥
सुधा सुख सींचो मुखचंद की मरीचिन तें,
बीथिन 'प्रबीन बेनी' चांदनी सी ब्वै रही।
उमगे अनंत सुख कंत की मिलन जाति,
आगे-आगे बन में बसंत ऋतु ह्वै रही॥